जवाब दो!!! सरकार
www.jawabdosarkar.com
देश का पहला जवाबदेही पोर्टल

देश के लिए... अव्यवस्था के खिलाफ...

JAWAB DO SARKAR ™

www.jawabdosarkar.com

रेफरेंस संख्या –2020/cfps/02 | E-Newsletter, Issued in Public Interest | मंगलवार, 11 मई 2021

॥कोरोना नाम की लूट है,लूट सके तो लूट॥
॥जितना जल्दी लूट ले,नहीं तो प्राण जाएंगे छूट॥

निजी अस्पतालों की लूट से आम जन त्रस्त!!!

*भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत प्रकाशन एवं समस्त प्रकाशन IT Act 2000 के तहत उत्तरदायी
सर्वाधिकार@www.jawabdosarkar.com

जाँचो के लिए कतार!!!

ऑक्सीज़न के लिए कतार!!!

हॉस्पिटल के लिए कतार!!!

दवाइयों के लिए कतार!!!

वेक्सीनेशन के लिए कतार!!!

दाह संस्कार के लिए कतार!!!

कोरोना 2.0 का कहर

पिछले वर्ष मार्च महीने मे हमारी सरकारो को कोरोना की भयावहता का पता चला था,उसके बाद कई मोर्चों पर कोरोना से निपटने की तैयारियां की गयी|हालांकि कई मोर्चों पर हमे शुरुआती निराशा मिली,प्रधानमंत्रीजी को देश व्यापी लोकडाउन लगाना पड़ा,जिसके चलते लाखो,करोड़ों मजदूरों को अपनी मातृ भूमि के लिए अपने परिवारों सहित पैदल,साइकिल आदि तरीकों से पलायन करना पड़ा,लेकिन दिसंबर माह तक जैसे जैसे स्थितियाँ सुधरी सब कुछ ठीक होने लगा और जनता अपने काम-धंधो,तीज-त्योहारों,शादी-ब्याहों मे व्यस्त होने लगी,सरकारे भी अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चुनाव,धार्मिक आयोजन करवाने लगी|

ऐसी सामान्य परिस्थितियों मे किसी को भी कोरोना की आने वाली भयावहता का अंदाजा नहीं था|इस साल के अप्रेल आते आते कोरोना ने पुनः अपना विकराल रूप दिखाया और देश के कई हिस्सों को अपनी चपेट मे ले लिया,सरकारों की तैयारियां फिर अधूरी रह गयी और जनता एक बार फिर भगवान भरोसे हो गयी|

सरकारी तंत्र चरमराया

कोरोना 2.0 ने इस बार बुजुर्गों के साथ साथ युवाओं को भी निशाना बनाया है और कई परिवारों मे एक से अधिक मौते देखने को मिल रही है|सबसे बड़ी बात है कि कोरोना के इस हमले ने सरकारी सिस्टम को चरमरा कर रख दिया है|हालात यह है कि हॉस्पिटलों मे जगह नहीं है,जगह है तो ऑक्सीज़न नहीं है,ऑक्सीज़न है तो वेंटिलेटर नहीं है|ऐसा लग रहा है कि कोरोना 2.0 से लड़ाई के शुरुआती दो महीनों मे ही पूरा सिस्टम हाँफने लग गया है|

निजी अस्पतालों मे चल रही खुली लूट

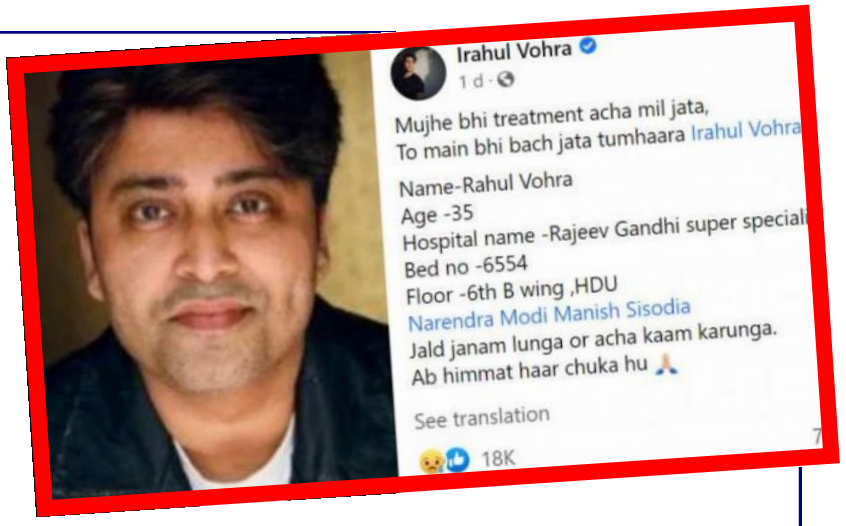

राज्य के लगभग सभी निजी अस्पतालों में राज्य सरकार की ओर से तय राशि के बावजूद बहुत अधिक धनराशि वसूली जा रही है और सरकार निर्देशों की खुलेआम अवहेलना की जा रही है|कई निजी अस्पतालों में कोरोना से पीड़ित सामान्य और गंभीर मरीजों से 3 लाख से लेकर 20 लाख तक रकम वसूलना सामान्य बात है|निजी अस्पतालों की इन नाजायज मांगों को बेचारे मरीजों के परिजन इस आशा से पूरी कर रहे है कि उनका मरीज ठीक हो जाएगा,लेकिन देखने मे आ रहा है कि पैसा खर्च करने के बावजूद ढंग से ना तो इलाज मिल रहा है और ना ही तमाम सुविधाएं|

जिलाधिकारी के हस्तक्षेप करने पर एसएनएमसी इमरजेंसी में किया गया भर्ती

बेड के लिए भटकती रहीं भाजपा विधायक की पत्नी, गार्ड ने भगाया

व्यथा कथा

आगरा | हिन्दुस्तान टीम

कोरोना काल में व्यवस्थाएं चौपट हो गई हैं और संसाधन कम पड़ गए हैं। आलम यह हो गया है कि भाजपा विधायक की पत्नी को कोविड वार्ड में बेड के लिए

संध्या लोधी

विधायक का यह हाल, तो आम जनता मर रही होगी

विधायक रामगोपाल लोधी ने कहा कि जब मैं डीएम को फोन करके पत्नी को भर्ती करने के लिए कह रहा हूं और कोविड में बेड नहीं मिल पा रहा है। सोचने वाली बात है कि आम जनता की क्या हालत होगी। विधायक ने कहा कि मैं स्वयं संक्रमित होकर पत्नी के साथ भर्ती था। शनिवार को मेरी भी छुट्टी हुई है। कमजोरी बहुत है। पत्नी के पास तक नहीं जा पा रहा। रुंधे मन से कहा कि पत्नी की आगरा में कैसी हालत है कोई नहीं पता चल रहा। ये विडम्बना है कि विधायक होकर भी पत्नी के बारे में हालचाल नहीं पता कर पा रहा।

भाजपा विधायक जसराना राम गोपाल

हाल ही में टीवी एक्टर राहुल वोहरा की ताहिरपुर के राजीव गांधी अस्पताल मे निधन हो गया|लेकिन जाते जाते वह इन मुनाफाखोरों को आईना दिखा गए|उन्होने अपने अंतिम मेसेज मे कहा कि अगर उन्हे भी बढ़िया इलाज दिया जाता तो वह बच सकते थे,जल्दी जनम लूँगा और अच्छा काम करूंगा|

राहुल वोहरा तो मर गए लेकिन निजी अस्पतालों का काला सच नंगा कर गए,उनकी मृत्यु पर उनकी पत्नी ने बताया कि उन्हे ऑक्सीज़न के नाम पर केवल खाली मास्क लगाया गया था|यह हाल तो उन लोगो का है जो कि सेलेब्रिटी है यू.पी.मे तो सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक की पत्नी को ही बेड नहीं दिया गया|

कफनखसोटों,मुनाफाखोरों,कमीशन बाजों के नाम रहेगा कोरोना का यह बेशर्म इतिहास|

आपको पता होगा कि कोरोना की पहली लहर मे सरकारी तंत्र के साथ-साथ पूरे देश ने कंधे से कंधा मिलाकर आम जन की हौंसला अफजाई की थी|लेकिन कोरोना 2.0 मे कफनखसोट,मुनाफाखोर और कमिशनबाज हावी हो गए है|हर तरफ कालाबाजारी चल रही है|जो जितना लूट सकता है लूट रहा है|ऐसे मे हमे कबीर का दौहा इस रूप मे याद आता है|

||कोरोना नाम की लूट है,लूट सके तो लूट||जितना जल्दी लूट ले, नहीं तो प्राण जाएंगे छूट||

वाराणसी से एयर एम्बुलेंस से लाए मरीज, नहीं बचा: प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र वाराणसी से एयर एम्बुलेंस के जरिए कोविड मरीज को बुधवार को जयपुर लाया गया। वह बच नहीं पाया। दोपहर 2 बजे जयपुर एयरपोर्ट पर एक ... में शिफ्ट कर सीकर रोड स्थित निजी अस्पताल के लिए रवाना किया। रास्ते में मरीज का दम टूट गया। बताया कि उसका ऑक्सीजन स्तर बहुत कम हो गया था। मृतक वाराणसी में उद्योगपति था, जिसे परिचित चिकित्सक की राय के बाद यहां भेजा था

कोरोना में मेडिकल मुनाफाखोरी | पत्रिका की 6 राज्यों में पड़ताल, सब जगह बुरा हाल

निजी अस्पतालों में खुली लूट

06/05/21

कोरोना काल में निजी अस्पताल लूट-खसोट के केंद्र में तब्दील हो गए हैं। मरीज कोरोना की आफत से बेहाल हैं, तो निजी अस्पताल मनमानी वसूली में जुटे हैं। फीस नहीं चुकाने पर शव सड़क पर फेंके जा रहे हैं। निजी अस्पताल जैसे भी हो, कमाई कर लेना चाहते हैं। **पत्रिका टीम** ने 6 राज्यों में पड़ताल की। रिपोर्टरों ने ऐसे हालात बयां किए कि रूह कांप ... हैं। सरकार से कब तक जागने की उम्मीद ... जाए। सब कुछ सरकारों की आंखों के सामने हो ...

राजस्थान: मरीज के परिजन का ... पत्रिका को दिया वीडि...

पहले बेड फुल ...

निजी अस्पतालों के कारनामे,जो तमाम सरकारी दावों की पोल खोल रहे है|

आपदा में ये कैसा अवसर | एम्बुलेंसकर्मी कर रहे ...

12 किलोमीटर का किराया मांगा आठ हजार, चार हजार एडवांस भी

07/05/21

... निजी अस्पताल मोटी रकम ऐंठने में जुटे रहते हैं? फिल्मी पर्दे से बाहर हकीकत की जमीन पर भी कई निजी अस्पतालों में मरीजों से लूट की होड़ मची है।

महामारी काल में मौतों के मंजर के बीच भी ये निजी अस्पताल एक-एक सांस की मोटी कीमत वसूल रहे ...

... बेड दिलाने और इलाज करने के नाम पर 2 दिन के 1.40 लाख रुपए मांगे। कहा, यह केवल बेड का चार्ज है, दवाओं के रुपए अलग से देने होंगे। प्रतिदिन 20 से 30 हजार रुपए दवाओं के अलग से मांगे गए। सहमति बनने के बाद 'डील' कर ली गई।

स्थित धन्वन्तरि अस्पताल का है। अस्पताल संचालक पहले बेड की ...

... सदेह के घेरे में

सैचुरेशन 95 फिर भी चढ़ा रहे थे ऑक्सीजन

कई जगह मरीज को छुट्टी देने की स्थिति ...

यहां गईं टीमें

पत्रिका में प्रकाशित खबर। | नेगेटिव जांच रिपोर्ट देना | विभाग अलग से गाइडलाइन ...

पत्रिका के खुलासे के बाद: प्राइवेट हॉस्पिटल एंड नर्सिंग ...

स्टिंग में पकड़े निजी अ... को सोसायटी ने किया ...

जांच के लिए उच्च स्तरीय कमेटी गठित

कहा... ऐसे कुछ अस्पतालों से ...

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. कोरोना संक्रमितों की मजबूरी का फायदा उठाकर इलाज के नाम पर भारी वसूली करने वाले मानसरोवर के न्यू सांगानेर रोड स्थित धन्वन्तरि अस्पताल से निजी अस्पतालों की सोसायटी ने किनारा कर लिया है। स्टिंग में वसूली के खुलासे के बाद प्राइवेट हॉस्पिटल एंड नर्सिंग होम्स सोसायटी ने अस्पताल को सोसायटी की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया।

राजस्थान पत्रिका में गुरुवार के अंक में 'निजी अस्पतालों की लूट' शीर्षक से प्रमुखता से समाचार प्रकाशित होने के बाद सोसायटी ने यह त्वरित निर्णय लिया। सोसायटी की ओर से जारी आधिकारिक बयान में कहा गया है कि अस्पताल में कोविड काल में व्याप्त अनियमितता व भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिए उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया गया है। पढ़ें स्टिंग @ पेज 12

स्टिंग के दौरान का फाइल फोटो।

कर्नाटक की तरह निजी अस्पतालों का अधिग्रहण करे सरकार : राठौड़

उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मांग की है कि कर्नाटक की तरह निजी अस्पतालों का राज्य सरकार अधिग्रहण करे। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सरकार ने निजी अस्पतालों का 50 फीसदी कोटा अपने पास ले लिया है, जिसे वह 75 फीसदी तक बढ़ाने की तैयारी में है। उन्होंने कहा कि जयपुर के मानसरोवर स्थित अस्पताल में स्टिंग ऑपरेशन के बाद तो यह स्पष्ट हो गया है कि निजी अस्पताल कोरोना जैसी महामारी को वरदान समझ लोगों की जेब खाली करने में जुटे हैं। राज्य सरकार ऐसे अस्पतालों पर कोई कार्रवाई नहीं कर रही।

प्रतिदिन के म...

एक कोरोना मरीज के प... ने स्टिंग कर लूट का खु... करता वीडियो राजस्थान पत्रि... उपलब्ध कराया था। वीडियो ... के मानसरोवर में न्यू सांगाने... स्थित धन्वन्तरि अस्पताल क... अस्पताल संचालक पहले बे... मारामारी का ढोंग कर रहे हैं, ... कोरोना संक्रमित मरीज के प... से खुले में इलाज के बदले प्र...

निजी अस्पतालों की खुली लूट : बीमा कंपनी से उठाया भुगतान और मरीज से भी की वसूली

बीमित कोविड मरीज से कहा-60 हजार दो, सुविधा शुल्क लगेगा

फॉलोअप

निजी अस्पतालों में खुली लूट

राजस्थान पत्रिका

प्रकाशित खबर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. सरकार की सख्ती के बाद भी कोरोना मरीजों से निजी अस्पतालों की लूट जारी है। अस्पतालों में बेड, ऑक्सीजन और आईसीयू देने की एवज में अस्पताल मरीजों से मनमाना शुल्क वसूल रहे हैं। राजधानी के एक अस्पताल में बीमित मरीज से छुट्टी के समय सुविधा शुल्क के नाम पर वसूली का मामला सामने आया है।

खातीपुरा स्थित एक निजी अस्पताल में कोरोना मरीज से डिस्चार्ज के समय अस्पताल प्रशासन ने 60 हजार रुपए अतिरिक्त वसूल लिए। मरीज ने जब इलाज का पूरा खर्चा बीमा कंपनी के जरिए से उठने की बात कही तो प्रशासन ने सुविधा शुल्क लेने का हवाला दिया। करीब तीन घंटे तक मरीज और अस्पताल प्रशासन के बीच विवाद हुआ। लेकिन अस्पताल प्रशासन ने बिना पैसे दिए मरीज को डिस्चार्ज नहीं करने की धमकी दे दी। मजबूरी में मरीज को 60 हजार रुपए का भुगतान करना पड़ा। पीड़ित मरीज दीपक अग्रवाल अभियंता है। पीड़ित ने इस मामले की शिकायत इंश्योरेंस कंपनी और जिला प्रशासन से की है।

पीड़ित ने बताया कि भुगतान करने समय अस्पताल प्रशासन ने मोबाइल फोन भी बाहर रखवा दिए। इतना ही नहीं, भुगतान का बिल भी नहीं दिया जबकि पूरा भुगतान कैश में लिया। मरीज ने आरोप लगाया कि इलाज की राशि बीमा कंपनी से लेने के बाद भी 60 हजार लेने का कारण पूछा तो अस्पताल प्रशासन ने तर्क दिया कि अस्पताल में आपात स्थिति में बेड उपलब्ध कराया गया। इस मामले में अस्पताल प्रशासन से बात करनी चाही तो फोन नहीं उठाया।

दूसरा मामला : बाहर से मंगवाई दवा तो 10 हजार का अंतर: राजधानी में दूसरा मामला सीकर रोड स्थित एक अस्पताल का सामने आया है। यहां पर प्रशासन मरीजों से अस्पताल के ही मेडिकल स्टोर से दवाई लेने का दबाव बना रहा है। इतना ही नहीं, बाहरी दवाइयों का उपयोग करने से मना कर रहा है। पीड़ित श्यामलाल खत्री ने इसकी शिकायत नोडल अधिकारी से की, लेकिन सुनवाई नहीं हुई। बताया कि उनकी भाभी गीता खत्री का इलाज यहां अस्पताल में चल रहा है। डॉक्टर की ओर से लिखी दवाइयों को अस्पताल के मेडिकल स्टोर से लेने पर 34 हजार रुपए बिल आया। दूसरे दिन इन्हीं दवाइयों को बाहर से लेकर आया तो 25 हजार रुपए की ही आई। लेकिन डॉक्टर ने बाहर की दवाइयों को लेने से मना कर दिया। मजबूरी में अस्पताल के मेडिकल स्टोर से ही दवाइयां लेनी पड़ी। दवाइयों के बिल में करीब 10 हजार रुपए तक का अंतर आ रहा है।

नोडल अधिकारियों के नंबर तक नहीं

पीड़ितों का आरोप है कि नोडल अधिकारियों से इन मामलों की शिकायत करनी चाही तो पहले तो अस्पतालों में नंबर नहीं मिले। इसके बाद वेबसाइट से नंबर लेकर कॉल किया तो फोन ही नहीं उठाया। इस मामले में जिला कलक्टर अंतर सिंह नेहरा का कहना है कि निजी अस्पताल मरीज पर किसी तरह की बंदिश नहीं डाल सकते। अगर किसी मरीज के साथ मनमानी हो रही है तो हमें शिकायत कर सकते हैं।

सरकार के मंत्रियों और नेताओं के सख्त बोल,लेकिन इनकी सुनता कोई नहीं है|

ऐसे हालातों में हम क्या है?लाचार?दोषी?या सहभागी??

देखा जाए तो कोरोना एक महामारी है जिस पर अभी मनुष्य का कोई बस नहीं है,लेकिन महामारी को नियंत्रित करना जरूर हमारे हाथ मे है|इन बिगड़ती परिस्थितियों मे हम लाचार अवश्य है लेकिन इसके साथ साथ इन परिस्थितियों के दोषी और सहभागी भी अवश्य है|प्राय: देखा गया है कि सिस्टम मे जवाबदेही और पारदर्शिता के अभाव लालफ़ीताशाही और भ्रष्टाचार का नासूर पनपता है और इसे पनपाने मे हम नागरिकों की खामोशी पोषण का काम करती है|हमारा सिस्टम केवल समस्याओं का केवल तात्कालिक समाधान खोजता है,क्यूंकि तात्कालिक समाधान मे ही कमीशनखोरी ज्यादा होती है और कीमते भी तेज होती है|

क्या हो समाधान?

- निजी अस्पतालों मे ईलाज के नियम बनाए जाए|50 बेड से अधिक के निजी अस्पतालों को ही कोरोना के लिए डेडिकेटेड अस्पताल घोषित किया जाए,बेड की क्षमता के अनुसार तमाम सुविधाएं,प्रशिक्षित कार्मिको के होने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए|
- 181 से अलग एकीकृत पारदर्शी ऑनलाइन शिकायत निवारण तंत्र विकसित किया जाए|शिकायत निवारण तंत्र को सार्वजनिक किया जाए,प्रत्येक समस्या के निवारण के लिए निश्चित समय सीमा तय हो,ज़िम्मेदारी तय की जाए|
- निजी अस्पताल के प्रत्येक बेड की जानकारी सार्वजनिक की जाए,एक लाख रुपए से अधिक का बिल बनने पर मरीज के बिल की जानकारी सार्वजनिक की जाए|
- जिन अस्पतालों को सरकारी जमीन और अन्य रियायते शर्तों के साथ दी गयी है उन शर्तों का कढ़ाई से पालन करवाया जाए|
- प्रत्येक निजी अस्पताल पर तैनात नोडल अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए|
- जन-प्रतिनिधियों,सामाजिक कार्यकर्ताओं,पत्रकारों को भी नोडल अधिकारी बनाया जाए|
- ऑक्सीज़न,अति-आवश्यक दवाओं की आपूर्ति पारदर्शी तरीके से कोटा-व्यवस्थानुसार की जाए|
- सरकार के आदेशों की अनदेखी करने वाले निजी अस्पतालों का प्रबंधन स्वयं के हाथों मे लिया जाये,रिसीवर नियुक्त किए जाए|
- अधिक से अधिक सरकारी अस्पतालों मे ईलाज हेतु आम जन को प्रेरित किया जाये|
- निर्धारित दरों से अधिक वसूली करने वाले निजी हॉस्पिटल प्रबन्धकों के विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज किए जाए|
- अन्य कोई समाधान जो जागरूक और जिम्मेदार नागरिक सुझाए|